

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील

हाई स्कूल परीक्षा 2009



- विषय कोड 801 परीक्षा का विषय हिन्दी विशिष्ट
- परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 2.03.09

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्र क्रमांक

केन्द्र क्र- 361018

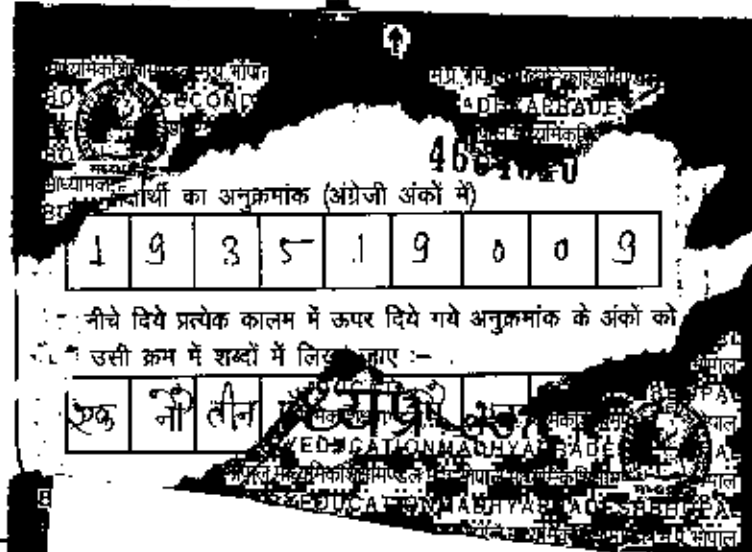
- परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें कोड सेट A-6 A

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में — अंकों में —
ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 09 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।



नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखें :-



B
S
E
M
P

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) Habe
नाम Meena Pooja पद S.A.
पता/संस्था Govt Girls H.S.S. Wardhan

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक ए

हस्ताक्षर (परीक्षक) [Signature]
परीक्षक क्रमांक 9620189

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) [Signature]
दिनांक 02/03/09

दिनांक 02/03/09

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छ	आठ
3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कवर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरे उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौंपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौंपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3



+

योग पूर्व पृष्ठ



प्रश्न क्रमांक - 01

- (1) ~~वामन सुविण परखारन लाषा रूपक झलंकार का उदाहरण है।~~
- (2) ~~परंपरा जयभा भाष्यनिकता एक विचारत्मक निबंध है।~~
- (3) ~~महाकाव्य का नाम ज्वाला प्रसाद था।~~
- (4) ~~उत्तमनाम एक महाकाव्य है।~~
- (5) ~~शिविप्रखलीन श्यनाओं का प्रथम प्रयोग रस है।~~

प्रश्न क्रमांक - 02

B
S
E
M
P

- (i) ~~वागीश किस शब्धि का उदाहरण है :-~~
- उत्तर: (घ) व्यंजन शब्धि
- (ii) ~~विद्यालय का समास विग्रह होगा :-~~
- उत्तर: (ग) विद्या का आलय
- (iii) ~~"जीवन गति है, वह नित अरुद्ध चलता है" पंक्ति पाह्य पुस्तक के किस कविता से ली गई है :-~~
- (ग) उदबोधन से
- ~~दानराम की बहन का नाम था :-~~
- (ग) सरस्वती
- ~~उल्लास कन्द में मात्राएँ होती हैं :-~~
- (ख) 28



प्रश्न क्रमांक 1-03

सत्य ✓
 सत्य ✓
 सत्य ✓

(iv) असत्य ✓
 सत्य ✓

प्रश्न क्रमांक :- 04

इस की काव्य की → (ख) आत्मा कहते हैं
 जीवन उपन्यास के रचयिता → (ग) प्रेमचंद
 चिकित्सा विज्ञान से संबंधित → (क) सुश्रुत संहिता
 एक प्रमाणित ग्रंथ
 शिक्षा आन्वयिक उपन्यासकार → (ङ) फणीश्वरनाथ रेणु
 अंधों की लाठी → (घ) एकमात्र सहारा

प्रश्न क्रमांक - 05

परमात्मा से विश्व-मिलन का भाव, रहस्यवाद की विशेषता है।
 मार्गरेट एमि जाबिथ नोबुल
 सरदार सुजानासिंह
 शांत रस
 (v) खण्ड काव्य



प्रश्न क्रमांक - 06

नात्सल्य रस - सम्राट सुरदास जीने स्वयं को छल-कपट करने वाला, दुष्ट एवं काम-वासना पीड़ित व्यक्ति कहा है वे स्वयं को नमक हामी कहते हैं जो ईश्वर द्वारा सुंदर तन दिए जाने की कृपा को ही भूल गया है प्रीठ-पूर्वक जीवन यापन करना, सत्य से नने पर आबरु होना, विषय - वासनाओं में आसक्ति होना, विषयी लोगों की संगति करना, ब्राह्मिकों की शुद्धि कराना आदि ऐसे कर्म उन्होंने किए हैं जो उन्हें दुष्ट, पापी एवं नीच बनाते हैं। वे अपने आप को भगवान की भक्ति कर पाने में भी असमर्थ बताते हैं। इन्हीं सब कारणों से उन्हें स्वयं को कुटिल-खल-कामी कहा है।

प्रश्न क्रमांक - 07

द्विवेदी मुनि जी रामनरेश त्रिपाठी जी एक आदर्श कवि हैं। प्रस्तुत कविता 'जीवन संदेश' में उन्होंने स्पष्ट किया है कि इस संसार में सभी जीव अपने कर्म में निरत हैं। मनुष्य भी एक कर्तव्यनिष्ठ प्राणी है। उसे अपने कर्तव्यों से विमुख होकर अपने जीवन के महान उद्देश्यों से विचलित नहीं होना चाहिए बल्कि रोज लोक कल्याणकारी कार्य करने रहना चाहिए। अपनी मातृभूमि के प्रति उसे



निष्ठा - भाव रखना चाहिए तभी उसकी सभ्य जीवन-यात्रा सार्थक होगी। विषम परिस्थितियों में सहनशीलता एवं शाहस का परिचय देना चाहिए। इस दुर्लभ मानव जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करते हुए स्वयं को कर्तव्यों के प्रति समर्पित कर देना चाहिए। इस प्रकार कवि ने शरद - सुवीथ भाषा शैली में जीवन का अनमूल्य संदेश दिया है।

प्रश्न क्रमांक - 08

B
S
E
M
P

प्रयोगवादी की विशेषताएँ :-

(1) नवीन उपमानों का प्रयोग :- इस कवियों ने प्राचीन काल एवं प्रचलित उपमानों के स्थान पर नवीन उपमानों की खोज की है। उनके मतानुसार काल्य के पुराने उपमान अब बासी पड़ गए हैं।

प्रेम-भावनाओं का खुला चित्रण :- प्रयोगवादी कवियों ने प्रेम-भावनाओं का अत्यंत खुला चित्रण करके उसमें अदृशीलता का समावेश कर दिया है।

प्रयोगवादी कवि	रचनाएँ
अशोक	हरी वास पर क्षण भर
धर्मवीर भारती	'अंधायुग', 'कनूप्रिय'



प्रश्न क्रमांक - 09

	जीवनी	आत्मकथा
(i)	इसमें लेखक अन्य व्यक्ति के जीवन-चरित्र का वर्णन करता है।	(i) इसमें लेखक स्वयं के जीवन-कृत को चित्रित करता है।
(ii)	इसमें तथ्यों एवं घटनाओं का ही वर्णन होता है।	(ii) इसमें लेखक की अनुभूति की गहराई विद्यमान होती है।
(iii)	लेखक, उस व्यक्ति को उल्लेख पक्ष को ही रखने का प्रयास अधिक करता है।	(iii) लेखक इसमें स्वयं की आलोचना भी करता है।
(iv)	यह प्रायः वर्णनात्मक शैली में ही लिखी जाती है।	(iv) यह कथात्मक एवं शैक्षिक शैली में लिखा जाता है।
(v)	जीवन में मूल्य-वर्णन दिया होता है।	(v) आत्मकथा में मूल्य-वर्णन नहीं दिया होता।

U
E
M
P

प्रश्न क्रमांक - 10

कहानी 'बैल की बिक्री' में जब शिबू अपने पिता से मोहन से बैल को बेच देने के लिए कहता है, तब मोहन जोचित स्वर में इससे कहता है, "बुप रहा घर में यदि जोड़ी न होती तो इतनी बर्तें बनाना न आता अरे, बैल तो किसान के हाथ-पैर होते हैं। यदि एक हाथ टूट भी जाए तो भी कोई दूसरा हाथ भी नहीं कटवा डालता। मैं इसकी जोड़ मिथाने

४



याग पूर्व पृष्ठ

पुस्तक अंक

कुल अंक

की पिक में हूँ और तू कहता है वेव दौ।
 दूर हो जा। चला जा जहाँ तुझे जाना हो,
 मैं खुद ही संव कर आँगा। इतना करने
 के बाद मोहन बैल की सेना दुगुने ईत्साह
 करता है ताकि यशोव के अपमान को वह
 बैल के अंतरतल से मियाँ सके।

प्रश्न क्रमांक - 11

प्रेमचंद की कहानी 'परीक्षा' में बूढ़ा जौहरी
 सरदार सुजान सिंह को कहा गया है। किन्तु वे
 हीर-जनहरतों के नहीं, बल्कि मनुष्यों के जौहरी
 हैं। जिस प्रकार एक कुत्ता जौहरी-धमकीवे
 कंकड़-फलपत्तों में से शुद्ध हीर की पहचान कर
 लेता है, वही उसी प्रकार सुजानासिंह भी दिप-
 दिपकर उन कपटी वयुक्तों (भ्रष्टा उम्मीदवारों)
 में से सुगवान बंस की पहचान कर रहे थे
 कि किसमें कर्तव्य भावना अधिक बलवती है।
 वस तरह बूढ़ा जौहरी भाड़ में बैठकर उम्मीदवारों
 की योग्यता की परख कर रहा था।

B
S
E
M
I

→ $\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$

∴ (1)

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~∴ (1)~~

ST - ~~...~~

P
M
E
S
S
B

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~∴ (1)~~

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

~~$\sin^2 \theta + \cos^2 \theta = 1$~~

ST - ~~...~~



+

6



- (ii) कथात्मक शैली :- आप अपने निबंधों में पौराणिक आख्यायिकाओं का उल्लेख अवश्य करते हैं।
- (iii) अवैषणालम्बक शैली :- प्राचीन धरनासों, संघों, पात्रों आदि से अनुसंधान संबंधी निबंधों में प्रयुक्त।
- उद्घरण शैली :- विषय स्पष्ट करने हेतु आप संस्कृत श्लोकों, कथनों का उद्घरण भी करते हैं।
- (iv) सूत्रात्मक शैली :- जीवन-सत्यों को उद्घोषित करने के लिए सूत्र प्रयोग भी करते हैं।

B
S
E
M
P

(v) साहित्य में स्थान :- वासुदेव वारण आठवाले जी श्रेष्ठ इतिहासकार एवं पुरातत्ववेत्ता हैं। भारतीय संस्कृति के जमीर अध्येता के रूप में आप प्रसिद्ध हैं। हिन्दी साहित्य के मुख्य निबंधकारों में आपका स्थान विशिष्ट है।

प्रश्न क्रमांक - 15

कवि परिचय :- महादेवी वर्मा :-
 (क) दो रचनाएँ :- राशि, नीहार, नीरजा, साहसगीत, यामा दीपशिखा आदि।

एक के बका का चार

(ख) भावपक्ष :-
 (i) आपके काल में विरह एवं वेदना की विज्ञाप्यारख्या हुई। वेदना का मधुर-रस शमरसता का आधार



य

- वनक प्रकृत होता है -
- (ii) आप आँसूओं के द्वारा कण-कण में प्रेम का संघार करना चाहती हैं। उनका जीवन विरह का जलजत है।
 - (iii) काल्य में प्रेम एवं रहस्यमयता का भी स्वाभाविक चित्रण हुआ है। आपने प्रकृति को उद्दीपन के रूप में अंकित किया है।
 - (iv) गहन आध्यात्मिक अनुभूतियों के साथ-साथ जीवन-दर्शन भी आपके काल्य में मिलता है।

कुला-पक्ष :-

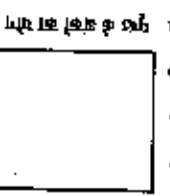
- (i) संस्कृतनिष्ठ बृद्ध साहित्यिक शैली को अपनाए हैं।
- (ii) काल्य में गीतक एवं मुक्तक शैली का प्रयोग किया है।
- (iii) उत्साह, विरोग, करुणा, एवं त्याग कविताओं के प्रमुख रस हैं।
- (iv) उपमा, रूपक, उल्लेख, मानवीकरण आदि अलंकारों का सहज प्रयोग हुआ है।
- (v) आपकी छन्दबद्ध रचनाओं में प्रतीकों का भी अत्र-तत्र प्रयोग हुआ है।

(अ) साहित्य में स्थान :- महादेवी वर्मा जी 'वेदना की अमर जाग्रीक' एवं 'आधुनिक युग की मीरा' कही जाती हैं। आपका दायवादी कवियों की चतुष्टयी आधार-रतन में प्रमुख स्थान है।

SEM P

1. विद्युत का मापन प्रयोग

(1)



1. विद्युत प्रवाह (कॉन्डक्टर) से गुजरने पर लैंप में प्रकाश उत्पन्न होता है। इससे हमें पता चलता है कि विद्युत प्रवाह का मापन कर सकते हैं।
2. विद्युत प्रवाह को मापने के लिए अमीटर का प्रयोग करते हैं। अमीटर को सर्किट में श्रृंखला में जोड़ना पड़ता है।
3. अमीटर की सहायता से हम विद्युत प्रवाह की मात्रा को माप सकते हैं।

4. विद्युत प्रवाह को मापने के लिए अमीटर का प्रयोग करते हैं। अमीटर को सर्किट में श्रृंखला में जोड़ना पड़ता है।
5. अमीटर की सहायता से हम विद्युत प्रवाह की मात्रा को माप सकते हैं।
6. विद्युत प्रवाह को मापने के लिए अमीटर का प्रयोग करते हैं। अमीटर को सर्किट में श्रृंखला में जोड़ना पड़ता है।
7. अमीटर की सहायता से हम विद्युत प्रवाह की मात्रा को माप सकते हैं।

8. विद्युत प्रवाह को मापने के लिए अमीटर का प्रयोग करते हैं। अमीटर को सर्किट में श्रृंखला में जोड़ना पड़ता है।
9. अमीटर की सहायता से हम विद्युत प्रवाह की मात्रा को माप सकते हैं।
10. विद्युत प्रवाह को मापने के लिए अमीटर का प्रयोग करते हैं। अमीटर को सर्किट में श्रृंखला में जोड़ना पड़ता है।
11. अमीटर की सहायता से हम विद्युत प्रवाह की मात्रा को माप सकते हैं।

21 - फलक प्रयोग



1. 1945-46 - 1946-47
 2. 1947-48 - 1948-49
 3. 1949-50 - 1950-51
 4. 1951-52 - 1952-53
 5. 1953-54 - 1954-55
 6. 1955-56 - 1956-57
 7. 1957-58 - 1958-59
 8. 1959-60 - 1960-61
 9. 1961-62 - 1962-63
 10. 1963-64 - 1964-65
 11. 1965-66 - 1966-67
 12. 1967-68 - 1968-69
 13. 1969-70 - 1970-71
 14. 1971-72 - 1972-73
 15. 1973-74 - 1974-75
 16. 1975-76 - 1976-77
 17. 1977-78 - 1978-79
 18. 1979-80 - 1980-81
 19. 1981-82 - 1982-83
 20. 1983-84 - 1984-85
 21. 1985-86 - 1986-87
 22. 1987-88 - 1988-89
 23. 1989-90 - 1990-91
 24. 1991-92 - 1992-93
 25. 1993-94 - 1994-95
 26. 1995-96 - 1996-97
 27. 1997-98 - 1998-99
 28. 1999-00 - 2000-01
 29. 2001-02 - 2002-03
 30. 2003-04 - 2004-05
 31. 2005-06 - 2006-07
 32. 2007-08 - 2008-09
 33. 2009-10 - 2010-11
 34. 2011-12 - 2012-13
 35. 2013-14 - 2014-15
 36. 2015-16 - 2016-17
 37. 2017-18 - 2018-19
 38. 2019-20 - 2020-21
 39. 2021-22 - 2022-23
 40. 2023-24 - 2024-25

1945-46

P
M
E
S
B

1. 1945-46 - 1946-47
 2. 1947-48 - 1948-49
 3. 1949-50 - 1950-51
 4. 1951-52 - 1952-53
 5. 1953-54 - 1954-55
 6. 1955-56 - 1956-57
 7. 1957-58 - 1958-59
 8. 1959-60 - 1960-61
 9. 1961-62 - 1962-63
 10. 1963-64 - 1964-65
 11. 1965-66 - 1966-67
 12. 1967-68 - 1968-69
 13. 1969-70 - 1970-71
 14. 1971-72 - 1972-73
 15. 1973-74 - 1974-75
 16. 1975-76 - 1976-77
 17. 1977-78 - 1978-79
 18. 1979-80 - 1980-81
 19. 1981-82 - 1982-83
 20. 1983-84 - 1984-85
 21. 1985-86 - 1986-87
 22. 1987-88 - 1988-89
 23. 1989-90 - 1990-91
 24. 1991-92 - 1992-93
 25. 1993-94 - 1994-95
 26. 1995-96 - 1996-97
 27. 1997-98 - 1998-99
 28. 1999-00 - 2000-01
 29. 2001-02 - 2002-03
 30. 2003-04 - 2004-05
 31. 2005-06 - 2006-07
 32. 2007-08 - 2008-09
 33. 2009-10 - 2010-11
 34. 2011-12 - 2012-13
 35. 2013-14 - 2014-15
 36. 2015-16 - 2016-17
 37. 2017-18 - 2018-19
 38. 2019-20 - 2020-21
 39. 2021-22 - 2022-23
 40. 2023-24 - 2024-25

SI - 1945-46

1. 1945-46 - 1946-47
 2. 1947-48 - 1948-49
 3. 1949-50 - 1950-51
 4. 1951-52 - 1952-53
 5. 1953-54 - 1954-55
 6. 1955-56 - 1956-57
 7. 1957-58 - 1958-59
 8. 1959-60 - 1960-61
 9. 1961-62 - 1962-63
 10. 1963-64 - 1964-65
 11. 1965-66 - 1966-67
 12. 1967-68 - 1968-69
 13. 1969-70 - 1970-71
 14. 1971-72 - 1972-73
 15. 1973-74 - 1974-75
 16. 1975-76 - 1976-77
 17. 1977-78 - 1978-79
 18. 1979-80 - 1980-81
 19. 1981-82 - 1982-83
 20. 1983-84 - 1984-85
 21. 1985-86 - 1986-87
 22. 1987-88 - 1988-89
 23. 1989-90 - 1990-91
 24. 1991-92 - 1992-93
 25. 1993-94 - 1994-95
 26. 1995-96 - 1996-97
 27. 1997-98 - 1998-99
 28. 1999-00 - 2000-01
 29. 2001-02 - 2002-03
 30. 2003-04 - 2004-05
 31. 2005-06 - 2006-07
 32. 2007-08 - 2008-09
 33. 2009-10 - 2010-11
 34. 2011-12 - 2012-13
 35. 2013-14 - 2014-15
 36. 2015-16 - 2016-17
 37. 2017-18 - 2018-19
 38. 2019-20 - 2020-21
 39. 2021-22 - 2022-23
 40. 2023-24 - 2024-25



(9) संलग्न पेके डाफ्ट न० - 24000

विनीत -
अंगद शर्मा

प्रश्न क्रमांक :- 20

विषय :- (iii) वर्तमान में कंप्यूटर की उपयोगिता

किसी इतना दम, स्मरण-शक्ति कदम धर सके।
अति न पवन की भी, होइ मुझसे कर सके।

प्रस्तावना :- वर्तमानकालीन युग वैज्ञानिक दृष्टिकोण का है,
इल्का का है। यह संभवतः 'विज्ञान काव' के नाम
से ही जाना जा रहा। विज्ञान के चमत्कारों की
व्यापकता इतनी है कि उनसे कोई अनमिन्न नहीं
है। वन्ही चमत्कारों में से एक 'कंप्यूटर' भी
है, जिसे 'मानव मस्तिष्क का अपर रूप' की भी
संज्ञा प्राप्त है। कंप्यूटर आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र
की आवश्यकता बन चुका है। तथा इससे कार्यप्रणाली
अति तीव्र एवं सरल हो गई है।

कंप्यूटर से आशय :- कंप्यूटर एक यांत्रिक मस्तिष्क जो
जटिल से जटिल गणितीय गणनाएँ भी क्षण
समय में पूर्ण करके नेत्रों के समक्ष प्रस्तुत कर देता है।

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग



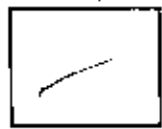
यां

इसमें सूचनाओं का सञ्चालन या कृष्या जा सकता है। इसके मुख्यतः तीन भाग होते हैं - सी. पी. यू. ; मॉनीटर एवं की-बोर्ड। सी. पी. यू. इसकी कार्य-प्रणाली को नियंत्रित एवं संचालित करता है।

कम्प्यूटर का इतिहास : — आज से लगभग 100 ई. पूर्व जापान में शैकस नामक अद्युयंत्र की निर्माण हुई जिसके द्वारा सरल गणनाएँ की जा सकती थीं। मनुष्य की उत्सुकता इस क्षेत्र में भी बढ़ी और अनुसंधान हुई। सन् 1833 में इंग्लैंड के एक चार्ल्स बैबेज ने कम्प्यूटर से संबंधित दो महत्वपूर्ण यंत्रों की रचना और आधुनिक कम्प्यूटर की कल्पना दी। अतः उन्हें इसका जनक भी कहा जाता है।

सन् 1942 में हार्वर्ड आइजेनबर्ग अमेरिकी वैज्ञानिक ने कम्प्यूटर का सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन किया। वह एक महान उपलब्धि का दिन था। किन्तु यह बहुत बड़ा होने के कारण सुविधाजनक नहीं था। धीरे-2 तकनीकी विकसित होती गई और आज कम्प्यूटर इतने छोटे आकार के हो चुके हैं कि उन्हें जेब में भी रखकर चला जा सकता है। भारत ने इसकी लोकप्रियता को देखते हुए सन् 1965 में इसका पहली बार आयात किया।

कम्प्यूटर की उपयोगिता : — कम्प्यूटर की उपयोगिता कई क्षेत्रों में देखी जा सकती



B
S
E
M
P

(i) औद्योगिक क्षेत्र :- कारखानों एवं मशीनों के संचालन हेतु इनका खूब उपयोग हो रहा है।

(ii) सूचना क्षेत्र :- सूचना एवं समाचार प्रेषण के क्षेत्र में कम्प्यूटर ने क्रांति ला दी है। कम्प्यूटर नेटवर्क (इन्टरनेट, ई-मेल आदि) ने संपूर्ण विश्व को एक ग्राम में बदल दिया है। सूचनाएं आसानी से प्रेषित की जा रही हैं।

(iii) बैंकिंग क्षेत्र में :- बैंकों में हिसाब-किताब रखने के लिए इनका पर्याप्त उपयोग हो रहा है। यहां तक कि बैंक अब घरों से भी जुड़ चुके हैं।

(iv) विज्ञान क्षेत्र में :- नवीन वैद्यशाळाओं की प्राथमिक कम्प्यूटर ही होता है। विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में कम्प्यूटर काफी मदद कर रहा है।

(v) डिजाइनिंग :- अब इंजीनियर भवन, उद्योगों, वाहनों, वायु-यानों आदि के डिजाइन कम्प्यूटर द्वारा आसानी से कम समय में ही बना लेते हैं।

(vi) कला के क्षेत्र में :- प्रिंटर अपने मनपसंद व चित्र व आकृतियों के द्वारा प्राप्त कर रहे हैं। छायाचित्रों, चित्रों, कार्टून्स आदि के निर्माण में भी इसका प्रयोग हो रहा है।

इन सबके अलावा कंप्यूटिंग, शिक्षा, चुनाव, मुद्रा, प्रकाशन, खेलकूद आदि अनेक क्षेत्रों में इसकी व्यापकता है।



पृष्ठ के अंकों का योग

कम्प्यूटर के दोष :- यद्यपि कम्प्यूटर ने मानव जीवन को सुख-सुविधा एवं आरामदायक बनाया है किंतु



कुछ दोष भी हैं यह सिकड़ी लोणी का काम केली
 ही कर लेता है जिससे वे लोणी बैरीजगार रह जाते हैं
 जगनाको मे जरा सी भी झुटे होने पर समस्त क्रिया-
 कलाओं पर पानी फिर जाता है और बड़ी हातियाँ
 भी हो सकती हैं। मानव मस्तिष्क की तरह यह संवेदन
 शक्ति नहीं होता और सूक्ष्म-दृष्टि कर निर्णय नहीं ले
 पाता है।

उपसंहार :— कम्प्यूटर के एक मॉडल में जहाँ बसंत
 केली-क्रिया कर रहा है तो दूसरी ओर मानवीय
 मूल्यों का भी हास हो रहा है। हमें इसे अर्पित
 शैक्षिक रूप में उपयोग करना चाहिए, न कि स्वामी की
 तरह। कम्प्यूटर पर जबरन से अधिक आत्म निर्भरता
 मानवीय मस्तिष्क की उपेक्षा है।

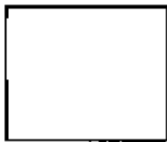
भारत में अभी भी पिछड़े कारों की वस्तु
 तक पहुँच नहीं है। अतः बसक प्रसार आवश्यक है।
 हमें कि कम्प्यूटर का उचित उपयोग कर
 भारत शीघ्र ही विकसित राष्ट्र-घोषणा में सम्मिलित
 हो जायगा।

“जय विज्ञान, जय मानव” ।



योग पूव पृ०

B
S
E
M
P



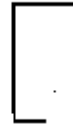
पृष्ठ के अंकों का योग

22

+



=



य

पृष्ठ 22 के अंक

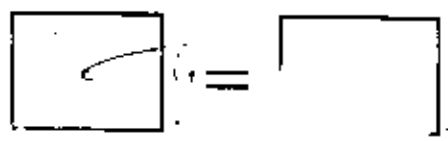
कु

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

23



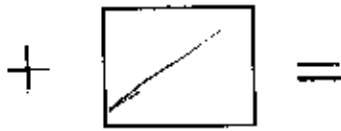
23 के अंक



B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग



पृष्ठ 24 के अंक



B
S
E
M
P

~~17/3/09~~
17/3/09
शुभ

52

17/3/09



पृष्ठ के अंकों का योग